साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 43, अगस्त(द्वितीय) , 2018

शीतांशु भारद्वाज का उपन्यासः डाक्टर आनंद

डा0 बंदना चंद

हिंदी साहित्य जगत के प्रमुख कथाकारों में शीतांशु भारद्वाज भी प्रमुख स्थान रखते हैं। इनका जन्म 1 नवंबर, 1936 में अल्मोड़ा के सल्ट ग्राम में हुआ। इनकी माता का नाम स्व0 श्रीमती दूला देवी एवं पिता का नाम स्व0 पानदेव था। शीतांशु भारद्वाज ने अपना रचना कार्य दिल्ली एवं राजस्थान में रहकर किया। इन्होंने अनेक विधाओं में लेखन कार्य किया, किंतु सर्वाधिक रूप से कहानी साहित्य एवं उपन्यास साहित्य लिखा।

शीतांशु भारद्वाज के उपन्यास एक और अनेक, डा0 आनंद, दो बीघा जमीन, एक और सीता, मोड़ काटती नदी, फिर वही बेखुदी, सीखचों के पार, दूर का आईना, लौटते हुए तथा शहंशाह-ए-तहबाजारी हंै। इनके उपन्यास सामाजिक, पारिवारिक तथा आंचलिक हैं। इनके उपन्यासों मंे नारी की स्थिति को विशेष रूप से चित्रित किया गया है। ग्रामीण अंचल से लेकर शहरी जीवन की अभिव्यक्ति इनके उपन्यासों में हुई है।

शीतांशु भारद्वाज का उपन्यास डाक्टर आनंद एक सामाजिक उपन्यास है। यह उपन्यास तक्षशिला प्रकाशन, नई दिल्ली से सन् 1979 में प्रकाशित हुआ। आकार की दृष्टि से यह उपन्यास लघु एवं अपने में पूर्ण है। इस उपन्यास में लेखन की दुनिया की वास्तविकता को चित्रित किया गया हे। समाज में लेखक को अनेक संघर्ष करने पड़ते हैं। इन संघर्षों को उपन्यासकार ने डा0 आनंद के माध्यम से उजागर किया हे। डा0 आनंद उपन्यास का प्रमुख पात्र है। एम0ए0, पीएच0डी0 करने के बाद उसे यह उपाधि मिलती है। वह एक बेराजगार और विवाहित युवक है। इस उपन्यास

में उपन्यासकार ने कतिपय फ्लैश बैक शैली का प्रयोग भी किया है। इस उन्यास में एक पढ़े-लिखे बेरोजगार की मनःस्थिति का चित्रण उपन्यासकार ने डा0 आनंद के रूप में किया है। आनंद हमारे समाज का ऐसा बेरोजगार युवक है, जिसके पास डिग्रियां तो हैं, लेकिन उसका सही लाभ उसे नहीं मिल पाता और वह रोजगार के लिए भटकता रहता है।

इस उपन्यास की प्रमुख नारी पात्र बिंदु है, जो कि आनंद की पत्नी है। वह एक आदर्श नारी के रूप में उपन्यास में अहम भूमिका निभाती है। कठिन से कठिन परिस्थितियों में भी वह अपने पति को साहस देती है। आनंद की बचपन से ही लेखन में रुचि होती है, जिसके लिए वह अपने गांव की अध्यापकी की नौकरी छोड़कर दिल्ली जाता है। परंतु जिस आकर्षण से वह यहां आता है वैसा कुछ भी नही होता है और उसे पछतावा होता है। इस उपन्यास में एक सामान्य लेखक की स्थिति का चित्रण उपन्यासकार ने किया है। आनंद ऐसा लेखक है जिसका जीवन दुख-दर्द और अभावों से भरा होता है। एक सामान्य लेखक की समाज में कोई उपयोगिता नहीं रहती। आनंद को महसूस होता है कि अगर वह लेखन की जगह कोई अन्य काम करता तो उसके जीवन में इतने अभाव नहीं होते: "न मैं साहित्य को समर्पित होता, न हम लोगों को आज ये दिन देखने पड़ते।" दिल्ली आकर आनंद कई पत्रिकाओं में काम करने लगता है। सर्वप्रथम वह आद्रा नामक पत्रिका में काम करता है, लेकिन कुछ समय बाद वह पत्रिका बंद हो जाती है और वह फिर से रोजगार की तलाश में भटकने लगता है। लेखक होने के साथ-साथ उसे पारिवारिक उत्तरदायित्व भी पूरे करने पड़ते हैं। वह व्यक्तिगत रूप से बी0ए0,एम0,ए0 करने के बाद अपने अध्यापक-लेखक मित्र डा0 चारुचंद्र के सुझाव से पीएच0डी0 भी कर लेता है। पीएच0डी0 करने के लिए वह बिंदु के कुछ गहने भी बेच देता है। लेकिन यह उपाधि भी उसे व्यर्थ ही प्रतीत होने लगती है।

अपने परिवार का भरण-पोषण करने में भी असमर्थ रहता है। उसके द्वारा दो उपन्यास लिखे होते हैं, जिन्हें कोई भी प्रकाशक नहीं छापता है प्रकाशकों द्वारा कहा जाता है:"केवल रजिस्टर्ड टैªड मार्क वाले लेखकों की ही रचनाएं छापा करते हैं।" जिससे प्रकाशन की दुनिया की सच्चाई उजागर होती है। अपने मित्र मनीश की मदद

लेने वह 'पत्रिका' प्रकाशन जाता है। मनीश ने भी लेखन की दुनिया में आनंद के साथ ही प्रवेश किया था। पत्रिका प्रकाशन के प्रकाशक लालाजी जब उससे पूछते हैं कि आप क्या कुछ लिख लेते हैं! आनंद कहता हैः मैं साहित्यिक कहानियां लिखता हूं' लालाजी कहते हैं:"फिर तो बरखुरदार, क्या कहते हैं, साहित्य को ही विछाओं और उसी को ओढ़ते चलो।" उपन्यासकार ने लालाजी के माध्यम से समाज में साहित्य और साहित्यकार की वास्तविक स्थिति को व्यक्त किया है। समाज में साहित्य की इतनी दुर्दशा है कि कोई लेखक केवल साहित्यिक लेखन से अपना जीवन यापन नहीं कर सकता। लालाजी लेखन की दुनिया में घाघ घमंडी नाम से लिखते थे, लेकिन साहित्यिक लेखन के कारण उनका भी जीवन यापन करना कठिन हो जाता है।

इस उपन्यास में शिक्षण संस्थाओं और शिक्षकों की स्थिति को भी उजागर किया गया है। हमारे देश में शिक्षण संस्थाओं के रूप में कोचिंग काॅलेजों की भरमार है, जहां छात्रों को दाखिला देकर उनसे मनमाना शुल्क वसूला जाता है। शिक्षा की इतनी दयनीय स्थिति है कि छात्र-छात्राओं को अनेक स्कूल-कालेजों में प्रवेश नहीं मिल पाता और वह कोचिंग कालेजों में प्रवेश लेने के लिए मजबूर होते हैं। शिक्षकों की दुर्दशा का चित्रण करते हुए उपन्यासकार ने बटुकेश्वर नामक चरित्र के माध्यम से बताया है। वह अपनी मां का इलाज करवाने के लिए सोचता है लेकिन जब खुद की किसी क्लिनिक में जांच करवाता है तो उसे पता चलता है कि वह क्षय की द्वितीय अवस्था में है। एक साधारण शिक्षक की आर्थिक स्थिति भी ऐसी नहीं होती है कि वह खुद का उचित ढंग से इलाज करवाए। इलाज के अभाव में बटुकेश्वर लावारिश और पागल जैसा हो जाता है: निर्धनता की स्थिति ने उसे भिखारी बना दिया..... मुझे मां का इलाज करवाना है। चैराहे पर खड़ा वह नर कंकाल हर किसी आते-जाते के आगे हाथ फैला रहा था।"

इस उपन्यास में स्थान-स्थान पर कुमाऊँ अंचल के जीवन का, वहां के वातावरण, उत्सव, वेश-भूषा आदि का चित्रण भी किया गया है। इस उपन्यास में भ्रष्टाचार और योग्य युवाओं के साथ हो रही नाइंसाफी पर कटु व्यंग्य लेखक ने किया है। कोई भी बेरोजगार तभी रोजगार पा सकता है जब उसकी पहच बड़े-बड़े लोगों से होगी। समाज में हर तरफ घूसखोरी, भ्रष्टाचार ही व्याप्त है। उपन्यास का

नायक आनंद नियुक्ति के लिए विभागाध्यक्ष के पास जाता है, तो विभागाध्यक्ष कहते हैं: "आपका कहीं भी कोई स्टेटस नहीं है। न ही आपकी कोई राजनैतिक, सामाजिक पृष्ठभूमि है।" इसी तरह जब आनंद अर्पणा कालेज में पढ़ाता है, तो उसे उस शिक्षण संस्थान में भ्रष्टाचार दिखाई देता है। वह अपनी कक्षा पढ़ाकर बाहर निकलता है तो उसे लगता है कि वहां का बापू बतरा उसका मूल्यांकन कर रहा था। वह सोचता है: "इस देश में ऐसा क्यों होता है? एक मामूली-सा बापू अध्यापन का मूल्यांकन करे, यह इसी देश में होता है।" अर्पणा कालेज में ऐसे-ऐसे लोगों की नियुक्ति होती है जो कि अध्यापन के योग्य भी नहीं होते। उनमें से कई लोग ऐसे होते हैं जो दिन में सरकारी नौकरी करते हैं और शाम को इस कालेज में पढ़ाने के नाम से आते हैं। आनंद को उस काॅलेज में वे सभी विषय पढ़ाने को कहा जाता है, जिसे उसने कभी पढ़ा ही नहीं। आनंद ये सब देखकर चिंतित हो जाता है कि देश का भविष्य इन शिक्षण संस्थानों में है। आनंद का लेखक हृदय अनेक उथल-पुथलों से भर जाता है। वह ऐसे शिक्षण संस्थान में नहीं पढ़ाना चाहता। अतः वह अपना मौखिक त्यागपत्र दे देता है। इसके बाद आनंद राजस्थान चले जाता है। वहां वह पब्लिक स्कूल में अध्यापन करने लगता है। उस स्कूल में भी उसे सामाजिक, राजनीतिक, भ्रष्टाचार ही सब तरफ दिखाई देता है। वहां के संगीत अध्यापक शैलेंद्र शास्त्री उससे कहते हैं: "डाक्टर आनंद हर क्षेत्र में आपको राजनीति के दलदल मिलेंगे। आदमी वही हे जो उस दलदल में न फंसे।" उस पब्लिक स्कूल का वातावरण भी आनंद को रास नहीं आता है। उसे पढ़ाने के लिए जो टाइम टेबल दिया जाता है, उसमें कोई भी पीरियड क्रम से नहीं होते। वह समय सारणी उसे जन्म-कुंडली के समान लगने लगती है। वहां के अध्यापक भी खाली पीरियड्स में इधर-उधर की बातों पर बहस करने लगते हैं। आनंद जब अपना पीरियड पढ़ा रहा होता है तो अचानक से शिक्षक गिरधर उसकी क्लास में आता है और बच्चों से अपनी-अपनी किताब दिखाने को कहता है। दो छात्रों के पास किताब नहीं होती है। यह देखकर गिरधर उन्हें उठाता है और उन्हें दो-दो थप्पड़ मारकर चले जाता है। एक-दूसरे के कार्यों में दखल देना आनंद को ठीक नहीं लगता। उस स्कूल में सारे शिक्षक एक-दूसरे की बुराई करते हैं तथा उन्हें वहां से निकालने का प्रयास करते रहते हैं।

इस उपन्यास में लेखक ने नारी पात्र अनीता के माध्यम से नारी की पीड़ा, विवशता और उनकी दयनीय स्थिति को उजागर किया है। अनीता मनीश मलिक की पत्नी होती है। उन दोनों का रिश्ता संदेह के कारण विखरने लगता है। मनीश अनीता को मारता-पीटता है। वह उसे छोड़ देता है। अनीता भी उसे छोड़कर राजस्थान के पब्लिक स्कूल में लग जाती है। एक औरत होने के कारण उसे हर समय डर ही रहता हैं उस अजनबी शहर में उसे अकेलापन महसूस होता है। इस प्रकार स्पष्ट है कि इस उपन्यास में शिक्षित बिरोजगारी के कारण युवाओं की हताशा, निराशा का उद्घाटन होने के साथ-साथ भारतीय शिक्षण व्यवस्था की गिरावट, नारी शोषण आदि का यथार्थ चित्रण हुआ है।

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें